आदि काल से वर्तमान समय तक भारतीय कला में महिला कलाकारों की सृजनात्मकता

डॉ० शताक्षी चौधरी
असिस्टेंट प्रोफेसर, चित्रकला विभाग
रानी भाग्यवती देवी महिला महाविद्यालय, बिजनौर, उ०प्र०
ईमेलः satakshi10.8@gmail.com

Reference to this paper should be made as follows:

डॉ० शताक्षी चौधरी

आदि काल से वर्तमान समय तक भारतीय कला में महिला कलाकारों की सृजनात्मकता

Artistic Narration 2021,
Vol. XII, No. 2,
Article No. 28 pp. 181-190

https://anubooks.com/artistic-narration-no-xii-no-2-july-dec.-2021/

सारांश

भारत वर्श में महिलाओं की कला में निपुणता की कहानी अति प्राचीन है। आदिकाल से लेकर वर्तमान समय तक कोई काल ऐसा नहीं मिलेगा जिसमें महिलाओं ने कला की सष्जना न की हो। भारत में महिलाएं हमेषा से ही कला से जुड़ी रही हैं, चाहे वह लोक कला हो, चित्रकला, मूर्तिकला, गायनकला, नष्त्यकला या फिर कला का कोई अन्य प्रकार। नारी ने प्रत्येक क्षेत्र में प्रत्येक युग में अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है। प्रागैतिहासिक कला के अंलकरणात्मक छापों से लेकर वैदिक युग की मंत्र रचने और गाने वाली ऋशिकाएं जहाँ तक है, महिलाओं द्वारा ही रचित हुई होगी। रामायण, महाभारत, बौद्ध और जैन साहित्यों तथा पुराणों में भी महिलाओं द्वारा चित्रकारी की चर्चा की गयी है। इनके अतिरिक्त महाकवि कालीदास द्वारा रचित रघुवष, मेघदूत, कौटिल्य, के अर्थषास्त्र, भारतमूनि के नाट्यषास्त्र, वात्सायायन के कामसूत्र, बाणभद्र के हर्शचरितसार आदि ग्रन्थों में भी महिलाओं द्वारा पुरूशों के समान चित्रण करने का उल्लेख मिलता है। मध्यकाल में भी उपलब्ध तत्कालीन साहित्य–तंरगवती, कुवलयमाला, विनयपिटक, कथासरितसागर, सुरसुन्दरी कथा, अभिलाशितार्थ चिंतामणि मानसोल्लास से भी महिलाओं के चित्रकर्म में संलग्न होने के प्रमाण मिलते है, जिनमें अनुपमा व रंगल देवी के नाम प्रमुख है। तत्पष्चात् मुगल काल में भी पाँच महिला चित्रकारों के नाम ज्ञात हैं– साहिफा बानो, रूकैय्या बानो, नूरी नादिरा बानो, निनि और खुर्षीद बानो। राजस्थानी, पहाड़ी षैली में भी हमें महिलाओं के चित्रण कर्ण में निपुण होने के साक्ष्य मिलते है। इसके अतिरिक्त महिलाओं की उत्कष्ट सष्जनात्मकता हमें लोक एवं जनजातीय चित्रों में सदैव ही

*देखने को मिलती है, जिन्हें महिलाओं द्वारा विवाह उत्सवों में, जन्मोत्सवों पर, फसल उत्सव पर, उकेरा गया है। इन लोक एवं जनजातीय चित्रों द्वारा महिलाओं ने हमारी प्राचीन संस्कषति और सभ्यता को वर्तमान समय तक संजोये रखा है। वर्तमान में भी अनेक महिला कलाकारों जिनमें भूरी वाई, गंगा देवी, सीता देवी, दुलारी देवी, बउआ देवी आदि ने इन लोक चित्रों की रचना कर भारतीय कला को कृवैष्विक स्तर पर प्रकाषित किया है एवं अपनी और भारतीय कला की विष्व पटल पर एक विषिश्ट पहचान बनायी है। और आधुनिक युग के प्रारम्भ मे ही रविन्द्र नाथ टैगोर की भतीजी गष्हणी सुनयना देवी को उनकी कला के लिये ''**सेलीब्रेटी स्टेटस**'' से नवाजा गया जिससे महिलाओं ने अपनी राश्ट्रीय एवं अर्न्तराश्ट्रीय स्तर पर एक विषिश्ट पहचान बनायी। तत्पष्चात अमष्ता षेरगिल सरीखी कलाकार हुई। जिन्होंने अनेक महिला कलाकारों का पथ–प्रदर्षन करने के साथ–साथ भारतीय कला एवं महिलाओं को राश्ट्रीय एवं अर्न्तराश्ट्रीय स्तर पर ख्याति दिलायी और अब वर्तमान में महिलाएँ न केवल चित्रकारी में अपनी प्रतिभा दिखा रही है। अपितु मूर्तिकला, स्थापत्य कला, ग्राफिक कला, संस्थापन कला के अतिरिक्त टेकस्टाईल डिजाइनिंग, इंटीरियर डिजाईनिंग, फैषन डिजाइनिंग जैसे दुर्लभ क्षेत्रों में भी उन्होंने अपनी प्रतिभा का प्रदर्षन किया है। इनके अतिरिक्त वर्तमान में अनेक महिलाएं जिनमें– देवयानी कष्ष्ण, जया आपासमी, मीरा मुखर्जी, मष्णालिनी मुखर्जी, अंजलि इला मेनन, अर्पणा कौर, अर्पिता सिंह, नसरीन मोहम्मदी, अनूपम सूद, वी0 प्रभा, लिडिया मेहता लक्षमा गौड, इलष अहलूवालिया आदि ने अपनी कला के माध्यम से अर्न्तराश्ट्रीय ख्याति अर्जित कर विष्व में अपना एवं भारतीय कला व विषिश्ट स्थान बनाया है। इनके अतिरिक्त हजारों ऐसी महिला कलाकार हैं। जिन्होंने भारतीय कला के उत्थान के लिये सराहनीय कार्य किये है। इन सबके अतिरिक्त महिलाओं ने अब लेखिका कला अलोचक, क्यूरेटर, गैलरी मालिकों के रूप में भी अपनी विषिश्ट पहचान बनायी हुई है जिसमें गीता कपूर, किरण नाडार, सुन्दरी के0 श्री धरानी, गायत्री सिन्हा आदि के नाम प्रमुख है।*

भारतवर्ष में महिलाओं की कला में निपुणता की कहानी अति प्राचीन हैं। आदिकाल से लकेर वर्तमान समय तक कोई काल ऐसा नहीं मिलेगा जिसमें नारी ने कला की सृजना ना की हो। सृजन अथवा रचना करना नारी का प्रकृति प्रदत्त गुण हैं। भारत में नारी हमेशा से ही कला से जुड़ी रही है चाहे वह लोक कला हो, चित्र कला, मूर्ति कला, गायन कला, नृत्य कला या फिर कला का कोई अन्य प्रकार हो। नारी ने प्रत्येक क्षेत्र में प्रत्येक युग में अपनी प्रतिभा का परिचय दिया हैं। प्रागैतिहासिक युग में एक माँ के रूप में नारी ने अपने बच्चे की देखरेख हेतु नैसर्गिक रूप से रचनात्मक एवं सृजनात्मक कला रूपों की रचना की होगी। उन्होंनें बच्चों के मन बहलाव के लिए आस–पास के वातावरण को, पेड़ पौधों को, पशु–पक्षियों आदि की आकृतियों को अलंकरणात्मक ढंग से चित्रित करना प्रारंभ किया होगा। अतः स्त्री के कला में पारखी होने के प्रमाण प्रागैतिहासिक भित्तियों पर अंकित इन अलंकरणात्मक छापों से प्रारंभ हो सैंधव सभ्यता के अनेक मृदभांडों के अलंकरणों से लेकर वैदिक युग की मंत्र रचने और गाने वाली ऋषिकाएँ, जहाँ तक है महिलाओं द्वारा ही रचित हुई होंगी। भारत की सबसे प्राचीन गुफा जोगीमारा गुफा चित्रों के विषय में भी कहा जाता है कि देवदासी सुतनुका ने इस गुफा के भित्ति चित्रों का निर्माण किया था। जोगीमारा गुफा के पास ही एक अन्य गुफा सीता बोंगरा है, जो एक नाट्यशाला थी जहां पर यही दासी अभिनय करती थी।[1] ऋग्वैदिक युग में भी कई विदुषी स्त्रियों के नाम ज्ञात हैं जिनमें विश्ववारा, घोषा, अपाला, लोषामुद्रा, सिकता, निवावरी आदि प्रमुख हैं।

ऋग्वेद में ऋषियों द्वारा हवन के समय प्रतीक रूप में चित्र बनाए जाने का उल्लेख हैं। इस प्रकार स्त्रियों का चित्रण कर्म में पारंगत होने का स्पष्ट संकेत वेदों में मिलता हैं। उत्तर वैदिक काल में भी स्त्रियों को संगीत, नृत्य, चित्रकला तथा अन्य ललित कलाओं का अध्ययन करने का अधिकार था। महाकाव्य काल में भी महिलाओं की शिक्षा का प्रावधान था। बालक बालिकाएँ साथ–साथ पढ़ते थे। राजवंशी और धन संपन्न परिवारों में कन्याओं की शिक्षा के लिए घर पर ही गुरू नियुक्त किए जाते थे और स्त्रियों को वेदों और शास्त्रों के अतिरिक्त संगीत नष्त्य व ललित कलाओं की शिक्षा दी जाती थी।

रामायण, महाभारत, बौद्ध और जैन साहित्यों तथा पुराणों में भी चित्रकला से सम्बन्धित सामग्री का व्यापक भंडार हैं। उस समय में भी राज्यों में चित्रशालाएँ और नाट्यशालायें संरक्षित थी, जहां पर स्त्री व पुरूष दोनों समान रूप से चित्रण कार्य करते थे। रामायण काल में उर्मिला के उत्तम चित्रकृर्त्रि होने का उल्लेख किया गया हैं।[2] रानी कैकेयी के चित्रित भवन की चर्चा से उनकी भी कला में रूचि होने का ज्ञान प्राप्त होता हैं।[3] महाभारत काल में ऊषा– अनिरूद्ध के प्रेम प्रसंग में उषा की सखी चित्रलेखा को स्मृति पर आधारित चित्र बनाने में निपुण होना बताया गया हैं। महाभारत के अतिरिक्त, विष्णु पुराण, हरिवंश पुराण में भी चित्रलेखा का अपने चित्रण कौशल में पारगंत होने का विवरण मिलता हैं। महाकवि कालीदास द्वारा रचित मेघदूत नामक ग्रंथ में विरहणी यक्षी द्वारा अपने प्रवासी पति यक्ष का चित्र बनाने की चर्चा की गयी हैं। कालीदास की अन्य रचनाओं से भी स्पष्ट होता है कि उस समय स्त्री तथा पुरूष दोनों चित्रकारी करते थे।[4] इसके अतिरिक्त अर्थशास्त्र, नाट्यशास्त्र, कामसूत्र, मालती माधव, रत्नावली, स्वप्नवासवदत्ता, दशकुमारचरित, हर्षचरितसार आदि ग्रन्थों में भी महिलाओं द्वारा पुरूषों के समान चित्रण करने का उल्लेख मिलता हैं।

मध्यकाल (700 ई0 से 1450 ई0 तक) में मुस्लिम, तुर्की, फारसी, हुणों, अरबों आदि के आक्रमण के कारण कला का बहुत ह्रास हुआ और कला मंदिरो, महलों, और गुफाओं की भित्तियों से निकलकर पोथी चित्रों में तब्दील हो गयी क्योंकि उन्हें एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाया जा सकता था। इस समय जिन चित्रशैलियों ने प्रतिनिधित्व किया वह पाल और अपभ्रंश चित्र शैलियाँ थी, जिन्होंनें कला का अस्तित्व विपरीत परिस्थितियों में भी बचाये रखा। यद्यपि इस समय में भी महिलायें चित्र कार्यों में कहीं न कहीं संलिप्त रही होंगी क्योंकि सृजनशीलता महिलाओं का जन्मजात गुण हैं। ऐसा माना जाता है कि इस समय में जैन संघ में पुरूषों की अपेक्षा साध्वियाँ अधिक थी, जिनके चित्रण कर्म में निपुण व संलग्न होने के उल्लेख तत्कालीन साहित्य–कला तरंगवती, कुवलयमाला, विनय पिटक, कथासरितसागर, सुरसुन्दरी कथा, अभिलाषितार्थ चिन्तामणि मानसोल्लास आदि से मिलते है, जिनमें अनुपमा व रंगल देवी के नाम प्रमुख हैं।[5] सोमदेव कृत कथा सरित सागर में एक कथा से यह जानने को मिलता है कि परिव्राजिका कात्यायनी चित्रविद्या में अत्यन्त निपुण थी, उसने राजकुमार सुन्दर सेन के आग्रह पर राजकुमारी मन्दावती का एक सजीव चित्र अंकित किया था और राजकुमार के मित्रो

के आग्रह पर राजकुमार का भी सुन्दर चित्र बनाया था। एक जैन कथा तंरगवती में भी एक प्रेम प्रसंग से ज्ञात होता है कि उस समय महिलायें चित्रकारी करती थी एवं उनकी चित्र बनाने में रूचि थी। कथा इस प्रकार है कि तंरगवती का नायक जब रूष्ट हो विदेश चला जाता है तो नायिका तंरगवती नायक की खोज में एक चित्र–प्रदर्शनी का आयोजन करती है, ताकि उसका रूष्ट प्रेमी पति प्रदर्शनी को देखने के बाबत ही आ जायें।[6]

तत्पश्चात मुगल काल में भी महिलायें पुरूषों के समान चित्रकारी करती रही, उस समय की पाँच महिला चित्रकारों के नाम ज्ञात है– साहिफा बानो, रूकैया बानो, नूरी नादिरा बानो, निनि और खुर्शीद बानो। साहिफा बानो, जो जहाँगीर के दरबार में एक राजकुमारी थी, द्वारा चित्रित चित्र The son who mourned his father, आगा खाँ म्यूजियम में संग्रहीत हैं। दूसरा प्रसिद्ध चित्र थ्नदमतंस च्तवबमेपवद है। इसके अतिरिक्त साहिफा बानो द्वारा चित्रित अनेक चित्र ज्ञात है। रूकैया बानो, नूरी नादिरा बानो और निनी को उस समय यूरोपीय नक्काशी की प्रतियाँ बनाने के लिये जाना जाता था। खुर्शीद बानो द्वारा चित्रित चित्र हाथियों की लड़ाई हॉवर्ड हॉडकिन संग्रह में संरक्षित हैं।[7] शाहजहाँ के समय की एक महिला मूर्तिकार साशा का नाम भी ज्ञात हैं। हालांकि हमें केवल कुछ ही महिला कलाकारों के नाम ज्ञात हुये है परन्तु कई और नाम अभी गुमनाम (अज्ञात) हैं। राजस्थानी चित्रकला शैली में भी कुछ महिला कलाकारों के नाम ज्ञात है जिसमें मेवाड़ की उपशैली शाहपुर शैली जो फड़ चित्रांकन के लिये प्रसिद्ध हैं। इसी फड़ चित्रांकन की पहली महिला चित्रकार– पार्वती जोशी हैं। मेवाड़ की अन्य उपशैली नाथद्वारा शैली की महिला चित्रकार– कमला व इलायची है। अजमेर शैली चित्रकला में साहिबा नामक महिला चित्रकार का नाम मिलता है।[8] इस समय राजस्थान में महिलाये चित्रकला में ही नहीं अपितु अन्य कलाओं में भी संलिप्त थी, का ज्ञान राजस्थानी नौटंकी कला की पहली महिला कलाकार मुशतर बाई से होता हैं।

इसी क्रम में महिलाओं की उत्कृष्ट सृजनात्मकता हमें लोक एवं जनजातीय चित्रों में सदैव ही देखने को मिली है, जिन्हें आदिकाल से महिलाओं द्वारा विवाह उत्सवों में, जन्मोत्सवों पर, फसल उत्सव पर तथा अन्य त्यौहारों, उत्सवों में उकेरा गया हैं। महिलाओं द्वारा इन चित्रों को घर के ऑगन या फिर भित्तियों पर अंकित किया गया हैं। भारत के लगभग सभी प्रांतो में महिलाओं ने अनोखे ढ़ंग से सहज, सुलभ माध्यमों से इन चित्रों को निरन्तर गतिमय बनाये रखा है, जिसके दर्शन हमें किसी भी गाँव के घर–आँगन में, महिलाओं की हथेलियो में मेंहदी के रूप में, अंगों के गोदनों में, फर्श पर बनी रंगोलियों, अल्पनाओं और चौकपूरनों में, दीवारों पर बनी सांझी, माण्डनों के रूप में प्राप्त होते हैं। मिथिला के कोहबर चित्र, कालीघाट के पट चित्र, केरल के कोलम, उत्तराखण्ड के ऐपण लोक चित्रों के कुछ सर्वश्रेष्ठ उदाहरण हैं। इन चित्रों द्वारा ही महिलाओं ने हमारी प्राचीन संस्कृति और सभ्यता को वर्तमान समय तक संजोये रखा हैं। वर्तमान समय में भी अनेक महिला कलाकारों ने लोक चित्रों की रचना कर अपने साथ–साथ भारतीय

कला को वैश्विक स्तर पर प्रकाशित किया हैं। इन महिला कलाकारों में भूरी बाई, गंगा देवी, सीता देवी, दुलारी देवी बउआ देवी, विभा दासी, महासुंदरी देवी, जागदम्बा देवी, दुर्गा बाई आदि के नाम प्रमुख हैं। लोक कला के अतिरिक्त जनजातीय कला में भी महिलाओं की सक्रिय भूमिका रही हैं। जनजातीय कला यथा–भील कला, गोण्ड़ कला, सौरा कला, पिथौरा कला, वरली कला, थंका चित्र आदि चित्रों में महिलाओं की कला के विपुल भण्डार भरे पड़े हैं। जिनकी आज विश्व पटल पर एक विशिष्ट पहचान हैं। इन लोक एवं जनजातीय कलाओं को महिलाओं ने अपने अथक परिश्रम से सँवारा हैं।

मुगल, राजस्थानी एवं पहाड़ी क्षेत्रों में कला अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँचाने के उपरान्त अंग्रेजी शासन एवं आपसी लड़ाईयों के कारण इन शैलियों में कला का ह्रास होने लगा और कलाकार इधर–उधर भटकने लगे और अन्त में मुर्शिदाबाद के नवाब सिराजुद्दौला ने उन्हें शरण दी। परन्तु ईस्ट इंडिया कम्पनी, नवाब के झगड़ों तथा अफगानों और मराठों के आक्रमण के कारण सन् 1750–1770 ई0 के लगभग ये कलाकार पटना आकर बस गये। लगभग इसी समय भारत में अनेक ब्रिटिश चित्रकारों के आने से भारतीय कलाकारों पर उनका प्रभाव पड़ा और भारतीय कलाकारों ने अंग्रेजो के अधीन चित्रों का निमार्ण किया क्योंकि अंग्रेज उनसे चित्र अच्छे मूल्यों पर खरीदते थे। इस समय कुछ महिला अंग्रेज चित्रकार जिनमें– कैडरीन रीड, मिस आइजक, एमिली ईडन आदि प्रमुख है भारत आयी एवं उन्होंने भारतीय महिलाओं को भी चित्रण हेतु प्रेरित किया। कम्पनी शैली में भी दो महिला चित्रकार दक्षो बीबी और सोना कुमारी के नाम ज्ञात है। जिससे विदित होता है कि इस समय तक महिलायें पर्याप्त रूप से चित्रण कार्य कर रही थी। लेकिन अभी तक भी **महिला को केवल घरेलू कार्यों हेतु ही सक्षम,** उनकी प्रसिद्धि उनके कार्य के अनुरूप बहुत कम थी परन्तु धीरे–धीरे महिलाओं ने अपने कौशल एवं हुनर से राष्ट्रीय एवं अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाई। जिसका सशक्त उदाहरण– 1879 ई0 में कलकत्ता में युवा महिला कलाकारों की एक प्रदर्शनी है जिसका आयोजन रविन्द्रनाथ टैगोर की भतीजी गृहणी सुनयना देवी द्वारा किया गया था तथा प्रदर्शनी में सुनयना देवी को लोक कला के लिये **"सेलीब्रेटी स्टेटस"** दिया गया और इसी समय की अन्य महिला कलाकारो में सुकुमारी देवी, प्रतिमा टैगोर, लीला मेहता, सविता टैगोर, सुशीला का नाम उल्लेखनीय हैं जिन्होंने अपनी कलाकृतियों एवं चित्रण कार्य से अपनी राष्ट्रीय एवं अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर विशिष्ट पहचान बनायी।[9] लगभग इसी समय भारत में मद्रास, कलकत्ता, मुम्बई, लाहौर, लखनऊ, इंदौर में कला महाविद्यालयों की स्थापना की गयी और सन् 1919 ई0 में रविन्द्रनाथ टैगोर द्वारा शान्ति निकेतन में कला भवन की स्थापना से महिला कलाकारों का एक बहुत बड़ा वर्ग विकसित हुआ लगभग इसी समय वर्षों से स्थापित पुरूष वर्चस्व को सर्वप्रथम अमृता शेरगिल ने तोड़ दिया। अमृता ने 14 वर्ष की आयु से चित्रकारी करना प्रारम्भ कर दिया था और मात्र 19 वर्ष की अवस्था में (सन् 1932 ई0) में उनकी कृति **"युवा कन्याएं"** जिसका शीर्षक उन्होंने उस समय **"वार्तालाप"** रखा था, को देखकर पेरिस के कलासमीक्षकों ने मुक्त कण्ठ से उनकी प्रशंसा की तथा उन्हें गाँड सेलों की सदस्या बनने का सुअवसर मिला।

अमृता पहली आधुनिक भारतीय महिला कलाकार थी, जिन्हें कला के क्षेत्र में ऐसा सम्मान मिला था।[10] लेकिन 29 वर्ष की उम्र में उनकी अकाल मृत्यु से भारतीय कला को गहरा आघात पहुँचा परन्तु उन्होंने अपनी चित्रकारी के माध्यम से 20वीं शताब्दी की अनेक महिला कलाकारों का पथ–प्रदर्शन किया था। उनसे प्रेरण लेते हुये नसरीन मौहम्मदी, नलिनी मलिनी और अर्पिता सिंह सहित अनेक महिला कलाकारों ने अपनी कला के माध्यम से अपने विचारों एवं सृजनात्मकता को वैश्विक स्तर पर विशेष पहचान दिलायी। अब महिलाओं ने न केवल चित्रकारी में अपनी प्रतिभा दिखायी अपितु उन्होंने कला के विविध आयामों यथा मूर्तिकला, स्थापत्य कला, ग्राफिक कला, संस्थापन कला के अतिरिक्त टेक्सटाईल डिजाइनिंग, इंटीरियर डिजाइनिंग, फैशन डिजाइनिंग जैसे क्षेत्रों में भी अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया एवं भारतीय कला को अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति दिलायी। कला के क्षेत्र में ही नहीं अपितु महिलाओं ने अब लेखिका, कला आलोचक, क्यूरेटर, गैलरी मालिकों के रूप में भी अपनी विशिष्ट पहचान बनायी है, जिसमें गीता कपूर, किरण नाडार, सुन्दरी के0 श्री धरानी, गायत्री सिन्हा, जया जेटली, शहर जमाल आदि महिलायें भारतीय कला जगत में मील का पत्थर हैं।

सन् 1986 का वर्ष महिला कलाकारों के लिये बहुत महत्वपूर्ण रहा क्योंकि इस वर्ष ललित कला अकादमी नई दिल्ली, त्रिवेणी कला संगम, नई दिल्ली, भारत सरकार के मानवाधिकार एवं विकास मंत्रालय, शिक्षा सांस्कृतिक मंत्रालय, वूमन वेलफेयर मंत्रालय एवं राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय, नई दिल्ली के संयुक्त प्रयासों से **"भारतीय महिला कलाकार"** शीर्षक से देश में महिला कलाकारों की संयुक्त कला प्रदर्शनी का आयोजन गया था। इस प्रदर्शनी में 43 महिला कलाकारों की 73 कलाकृतियों की प्रदर्शित किया गया था। निश्चित ही यह प्रदर्शनी देश की महिला कलाकारों की प्रथम एवं विशाल प्रदर्शनी थी, जिसमें देश की अनेक महिला कलाकारों को एक मंच प्रदान किया था।[11] आधुनिक युग में भारतीय महिलाओं के लिये कला के क्षेत्र में जो बीज अमृता शेरगिल ने बोया था आज वह वृक्ष अनेक महिला कलाकारों से पुष्पित है जिनमें लीला मुखर्जी, मीरा मुखर्जी, अंजलि इला मेमन, अर्पणा कौर, मृणालिणी मुखर्जी, अनूपम सूद, गोगी सरोज पाल, भारती खेर, जया अप्पासामी, देवयानी कृष्ण, माधवी पारेख, निलिमा शेख, पीलू पोचखानवाला, नैनादलाल, बी0 प्रभा, लक्ष्मा गौड, जरीना, ऊषा रानी हूजा, जसुबेन शिल्पी, लिडिया मेडता, माया बरमन, दयानिता सिंह, इलूश अहलूवालिया आदि अनेक ऐसे नाम है जिन्होंने अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति अर्जित कर विश्व में अपना एवं भारतीय कला का विशिष्ट स्थान बनाया हैं।

अमृता शेरगिल के पश्चात जिन महिला कलकारों का नाम आता है उनमें लीला मुखर्जी का नाम सर्वोपरि हैं। **लीला मुखर्जी** शान्ति निकेतन से कला शिक्षा प्राप्त करने वाली प्रथम महिला थी। उन्होंने दिल्ली, कलकत्ता तथा बम्बई समेत अनेक शहरों में अपनी एकल प्रदर्शनी आयोजित की। इनके द्वारा निर्मित वुड कॉविंग व कांस्य कॉस्टिंग के शिल्प अत्यन्त सरल एवं मनमोहक है। इनकी रचनायें मुख्यतया जनजातीय कला से प्रभावित है, उदाहरणार्थ– **"फिगर**

लिफ्टिंग फुट" तथा "**युगल"** इंदौर में देवलालीकर की शिष्या **देवयानी कृष्ण** ने अनेकों माध्यमों एवं तकनीकों में कार्य किया लेकिन उन्हें प्रसिद्धि मुख्यतः उनके छापचित्रों के कारण मिली। इन पर लोककला के विभिन्न रूपों तथा मुखोटों का विशेष प्रभाव पड़ा। इनके कुछ प्रसिद्ध छापचित्रों की श्रंखला में मास्क, एलीफेन्ट, केक्टस, लवर्स (1961), अल्लाह और सन् 1970 में अधिक मोहक व संख्या में भी बड़ी **"क्या और कहाँ"** श्रंखला की रचना कर इन्होंने समकालीन कला जगत में अपना विशिष्ट स्थान बनाया। उन्होंने अनेक राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय कला प्रदर्शनियों में भाग लिये एवं कई पुरस्कार प्राप्त किये। शान्ति निकेतन से ही प्रशिक्षित **जया अप्पासामी**, चित्रकत्री होने के साथ–साथ एक कुशल लेखिका भी थी। इन्होंने तैल माध्यम में बड़े आकार के चित्र प्रायः हरे, काईया तथा नीले रंगों में खूबसूरती में अंकित किये। इनके चित्रों के विषय अधिकतर कली के समान कोमल किशोरियाँ रही हैं। इनके चित्रों की अपनी एक अलग विशिष्ट पहचान थी– एक विशाल भू–अंचल और उसमें फैली पर्वत श्रंखला। कभी–कभी इसमें वृक्ष भी अंकित किये गये है और इस प्रकार के वातावरण में अधखिली कली की भाँति किशोरावस्था छोड़कर यौवन में प्रवेश करती हुई कोई बालिका, कही बैठी और कहीं लैटी। **मीरा मुखर्जी–** जोकि एक प्रसिद्ध शिल्पकार के रूप में उभरी। उन्होंने अपने मूर्तिशिल्पों के निर्माण के लिए आदिवासियों की ढलाई की प्राचीन पद्धति अर्थात लास्ट वेक्स प्रोसेस को अपनाया। इस पद्धति में धरातल के टेक्सचर पर बहुत बल दिया जाता हैं। अतः उन्होंने इस तकनीक को एक नई दिशा दी हैं। उनके विशिष्ट रूपाकार एवं अभिव्यक्ति उनके द्वारा प्रयुक्त माध्यम तथा तकनीकी प्रक्रिया के परिणाम हैं। 1978 की विनाशकारी बाढ़ तथा 1984 की भोपाल गैस त्रासदी से सम्बन्धित उनके स्मरणीय मूर्तिशिल्प, मानवता के प्रति उनके गहरे सरोकार की, सशक्त अभिव्यक्ति हैं।[12] एक प्रयोगवादी मूर्तिकार जिन्होंने कला की कोई विधिवत शिक्षा प्राप्त नहीं की, लेकिन फिर भी कला के क्षेत्र में एक विशिष्ट नाम कमाया वह है– **पीलू पोचखानावाला।** इन्होंने सीमेन्ट और धातु की ढलाई सहित कई मीडियम और तकनीकों का एक साथ प्रयोग किया लेकिन धीरे–धीरे इन्होनें आयरन अैर स्टील स्क्रेप्स पर अपना ध्यान केन्द्रित किया। और इसके लिये लकड़ी, सीमेन्ट एवं लेड का प्रयोग छोड़ दिया। उन्होंने वेल्डिंग की तकनीक सीखी और बेकार लोहे व स्टील के टुकड़ो को अपने कार्य योग्य बनाया। एक कलाकार होने के अलावा, उन्होंन 1960 के दशक से कई वर्षों तक बाम्बे आर्ट फेस्विल के समन्वयक के रूप में भी काम किया। अनेक राष्ट्रीय व अर्न्तराष्ट्रीय कला प्रदर्शनियों में भागीदारी करके अनेक पुरस्कार प्राप्त किये हैं। **लिडिया मेहता कला** के भारतीय दृष्टिकोण, अर्थ तथा प्रयोजन के बहुत निकट हैं। उन्होंने खुद को क्रमशः मृदभांड–कलाकार (पॉटर) और फिर सिरेमिक मूर्तिशिल्पी के रूप में स्थापित किया हैं। वह विलक्षण कौशल के साथ स्टोनवेअर तथा पोर्सिलेन में भी कार्य करती हैं। उनके सभी बिम्ब उनकी चेतना की विभिन्न अनुभूतियों तथा दशाओं के सूचक हैं। **भारती खेर** आधुनिक समय में एक ऐसा नाम है जो विभिन्न माध्यमों यथा–चित्र, मूर्ति और संस्थापन कला

(इंस्टालेशन) में कार्य करती है। जिन्हें उन्होंने बिन्दियों के प्रयोग द्वारा विशिष्ट बना दिया है, जो एक भारतीय महिला की पहचान भी हैं। जिसके कारण समकालीन कला जगत में ये बिन्दी क्वीन के नाम से जानी जाती हैं। **"द स्किन स्पीक्स ए लैग्वेज नॉट इट्स"** (2006) इनकी सबसे प्रसिद्ध और चर्चित काम में से एक है यह एक मूर्ति है जो फाईवर ग्लास से बनी एक आदमकद मादा हाथी का प्रतिनिधित्व करती है और कई बिंदियो से सजी हैं। प्रसिद्ध कलाकार विनोद बिहारी मुखर्जी एवं लीला मुखर्जी की इकलौती सन्तान **मृणालिनी मुखर्जी** वस्तुतः एक शिल्पकार है। इनकी गरिमा इनके बड़े आकार के तथा प्रभावशाली मूर्तिशिल्पों के गांठों वाले धरातलों में देखी जा सकती हैं। इन्होंने अपरम्परागत मैटीरियल (सामग्री) का बहुत ही सुन्दर तथा सष्जनात्मक उपयोग किया हैं। इन्होंने जूट की रस्सियों, सुतली तथा डोरी को मोड़कर गाँठ बनाकर, खींचकर तथा अन्य प्रकार से आकारों की रचना की हैं। इनके मूर्तिशिल्प ऐसी आकृतियों का भ्रम पैदा करते हैं जो एक ही समय में मनुष्य जैसे तथा पादप जैसे दिखते हैं। इनकी संरचनाओं में टेक्सचर व रूपाकार की विविधता हैं। भारत की कांस्य महिला के नाम से जानी जाने वाली **जसुबेन शिल्पी** मुख्य रूप से एक कांस्य मूर्तिकार थी जिन्होंने अपने जीवन में लगभग 525 कांस्य से निर्मित अर्द्धप्रतिमायें और 225 बड़ी प्रतिमाओं का निर्माण कर कला जगत में अपनी एक विशेष पहचान बनायी। इन्होंने कई राष्ट्रीय व अर्न्तराष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त किये है और तो और इन्हें सन 2000 में **"वूमन ऑफ द ईअर"** का सम्मान अमेरिकन बायोग्राफिकल इन्स्टीट्यूट के द्वारा दिया गया। इनके द्वारा 2005 में बनायी गयी कास्य मूर्ति घोड़े की सवारी करती हुई रानी लक्ष्मी के कारण इनका लिम्का बुक ऑफ रिकार्ड में दर्ज किया गया हैं। नागपुर में जन्मी बी0 प्रभा को बचपन से ही चित्र रचना का शौक था। इनके चित्र अलग से ही पहचाने जा सकते हैं। इनके द्वारा अंकित अनावृत्ताओं–नवयौवनाओं के चित्रों ने कला–जगत में एक हलचल मचा दी थी। उन्होंने नारी आकृतियों को अत्यन्त कोमलता एवं मासूमियत लिये हुये अंकित किया हैं। लम्बे चेहरे, ग्रीवा, भुजाएँ, अँगुलियाँ और पर्याप्त लम्बी देह वाली आकृतियों में विशिष्ट उदारता एवं कोमलता है, जो सहज ही मन मोह लेती हैं। उत्तर प्रदेश के नेओली में जन्मी **गोगी सरोजपाल** तेल, ग्वाश, सिरेमिक, वीविंग, ग्राफिक्स और इंस्टोलेशन आदि माध्यमों के द्वारा अपने अर्न्तमन के भावों को अभिव्यक्त करती हैं। नारी चित्र गोगी के चित्रों का महत्वपूर्ण विषय हैं। वे नारी को विभिन्न मुद्राओं व पशुओं की सवारी करते हुय अधिकतर अंकित करती हैं जो काल्पनिक व मिथक प्रतीत होता हैं। उनकी अभिव्यक्ति उनके अपने ही अनुभवों पर आधारित हैं।

अर्पिता सिंह के काम में फंतासी तथा अतिथयार्थवादी दृष्टि के आश्चर्य दिखायी देते है। वह अपने चित्रों को एक दरी (टेपेस्ट्री) की तरह बुनती है जिसमें कई तरह के अभिप्राय यथा–झण्डे, फूलों के गुलदस्ते व टोकरियाँ, पक्षी व खिलौने आदि बिखरे दिखायी देते हैं। इनके चित्रों में बन्दूकें, कारे, हवाई जहाज और व्यक्ति चित्र के रूप में शीर्ष या आवक्ष भी दिखायी देते हैं, आदि की पूरे

कैनवास पर बार–बार आवृत्ति होती हैं। वह इस तरह की सारी सामग्री को किन्हीं कथाओं व घटनाओं से जोड़ देती है और इस तरह व बहुत चिन्ताकर्षक बिम्बों का सृजन कर देती हैं। अन्तराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त अर्पणा कौर का काम महिलाओं–बुद्धिजीवियों और कलाकारों में उभरती उस चेतना का प्रतीक है, जो न केवल अपने व्यक्तित्व को खोजना चाहती है बल्कि समाज के साथ नई तरह से जुड़ना चाहती है और कला में नई संवेदनाओं का विकास भी करना चाहती हैं। वह अपनी संरचनाओं का ढांत्रा, पहाड़ी लघुचित्रों की कुछ विशेषताओं का प्रयोग करते हुए निर्मित करती हैं– गोलाई लिये आकृतियाँ, अंकित क्षितिज, पृष्ठभूमिका आकाश, पृथ्वी तथा जल में विभाजन। उन्होनें सिक्ख आन्दोलन पर भी अनेक चित्र बनाये है जिन्हे मीडिया द्वारा अत्यधि ाक प्रोत्साहन मिला है। बहुत दिनों तक वे कैंची को अपने चित्रों में बनाती रही जिससे सतीश गुजराल उन्हें कैंची कहकर ही पुकारने लगें।[14] उन्होंने चित्रों के साथ–साथ भित्ति चित्र इंढटालेशन तथा छापा चित्र भी बनायें हैं। इन्होंने अनेक राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय प्रदर्शनियों, कला उत्सवों में प्रतिभाग कर अनेक पुरस्कार प्राप्त किये। इनके चित्र नेशनल गैलरी ऑफ मॉर्डन आर्ट नई दिल्ली, विक्टोरिया व अल्बर्ट म्यूजियम लन्दन, ब्राडफोर्ड म्यूजियम, यू0के. स्टोकहोम सिंगापुर के संग्राहलयों व देश–विदेश के कई निजी व सार्वजनिक संग्राहलयों में संग्रहित हैं। नैना दलाल भी समकालीन कला जगत में एक प्रसिद्ध नाम है जो चित्रकार के साथ–साथ एक प्रसिद्ध प्रिंट मेकर भी है इन्होंने इंग्लैण्ड जाकर कला की शिक्षा प्राप्त की। नैना के चित्रों में करूण रस की प्रधानता है। उनके चित्रों की विशेषताओं में लम्बी एवं खुली आँखें, लम्बी नाक तथा करूण भाव लिये चेहरे हैं। चर्तुमुखी प्रतिभा की धनी नसरीन मोहम्मदी सम्भवतः प्रथम भारतीय महिला कलाकार है जिन्होंने विशुद्ध रूप से रेखा, रंग, शेड तथा टेक्सचर का प्रयोग मिनिमल आर्ट की भाँति किया हैं। साथ ही इन्हें अपने रेखा–आधारित चित्रों के लिये विशिष्ट पहचान मिली। इन्होनें फोटोग्राफी में भी कार्य किया और इनके फोटो वर्क की पहली प्रदर्शनी 2003 में तलवार गैलरी, न्यूयॉर्क में लगी थी। भारत की एक महत्वपूर्ण चित्रकत्री होने के साथ–साथ **अंजलि इलामेनन** एक प्रसिद्ध भित्ति चित्रकार भी है। उनके रंगों की चमक बाइजेन्टाईन कला की, आकृतियाँ रूसी चित्र प्रतिमाओं के लालित्य की और छदिमा (पैंटीना) जैसे प्रभाव चीनी लाक्षापात्रों की याद दिला देते हैं। अंजलि के चित्र हाईबोर्ड या मसोनाईट बोर्ड पर प्रेक्षेपित स्वप्नों की रहस्यमयी प्रतिलिपियाँ हैं। अंजलि ने देश–विदेश में लगभग 30 से भी अधिक एकल प्रदर्शनियों को किया व अनेक अर्न्तराष्ट्रीय प्रदर्शनियों में भी भाग लिया। उन्होंने एल्जीयर्स बिनाले, साओं पाउलो बिनाले ब्राजील तथा तीन त्रिनाले–नई दिल्ली में भारत का प्रतिनिधित्व किया हैं। **अनूपमसूद** भारत की नई पीढ़ी के श्रेष्ठ कलाकारों में से एक हैं। यद्यपि अनुपम ने एक्रेलिक माध्यम से चित्र बनाने में महारथ हासिल की थी तथापि उन्होंने छापा चित्रण की अनेक विधाओं–अम्लांकन (एचिंग), इन्टैग्लियो, ड्राईप्वाईट, मैजोटिंट, एक्वाटिंट इत्यादि में भी बहुत ही अच्छा कार्य किया हैं। इन्होंने छापा कला की एक नई विधा कोलाज छापा चित्र का प्रारम्भ भी किया व अपनी कृतियों को एक

त्रिआयामी प्रभाव दिया। अपने पुराने छापा चित्रों की विभिन्न आकृतियों व पृष्ठभूमि को फाड़कर या काटकर या मरोड़कर आड़ा तिरछा करके उन्हें उभार के साथ लगाकर एक स्पष्ट त्रिआयामी प्रभाव प्रकट किया हैं। इसलिए सूद ने इन्हें कोलाज का नाम दिया हैं।

अतः भारतीय समकालीन कला में अमृता शेरगिल के बाद अनेक महिला कलाकारों ने उनके उत्तरदायित्व को सफलतापूर्वक पूरा किया तथा आज भी यह प्रयास जारी है तथा उन महिला कलाकारों की एक बहुत लम्बी सूची बनायी जा सकती है जिन्होंने भारतीय कला के उत्थान के लिए सराहनीय कार्य किया एवं अपना अमूल्य योगदान देकर भारतीय महिलाओं की छवि को राष्ट्रीय व अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर सम्मानजनक स्थान दिलाया।

संदर्भ ग्रंथ

1. डॉ0 अग्रवाल, आर0ए0– भारतीय चित्रकला का विवेचन, मेरठ, 2007, पृ0सं0–25
2. डॉ0 जोशी, अर्चना– विश्व इतिहास में महिला चित्रकार, जयपुर, 2007, पृ0सं0–79–82
3. डॉ0 वर्मा, अविनाश बहादुर– भारतीय चित्रकला का इतिहास, बरेली, 2012–13, पृ0सं0–33
4. डॉ0 प्रताप, रीता– भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, जयपुर, 2012 पृ0सं0–34–39
5. डॉ0 जोशी, अर्चना– विश्व इतिहास में महिला चित्रकार, जयपुर, 2007–08, पृ0सं0–96
6. डॉ0 प्रताप, रीता– भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, जयपुर, 2012, पृ0सं0–40–41
7. द हेरीटेज लैब, कल्चर, आर्ट, म्यूजियम– "फाइव वूमन आर्टिस्ट ऑफ मुगल कोर्ट" की वेबसाइट से
8. www.rajasthan.gyan.com से– "राजस्थानी चित्रशैली"
9. कला दीर्घा– अक्टूबर–2003, अंक–7, वर्ष–4, पृ0सं0–13
10. व्यास, चिन्तामणि– अमृता शेरगिल, नई दिल्ली, 1982, पृ0सं0–19
11. कला दीर्घा– अक्टूबर–2003, अंक–7, वर्ष–4, पृ0सं0–14
12. मागो, पी0एस0– भारत की समकालीन कलाः एक परिप्रेक्ष्य, दिल्ली, पृ0सं0–187
13. विकिपिड़िया.कॉम से
14. डॉ0 सिंह, चित्रलेखा– आधुनिक भारतीय समकालीन कला, इलाहाबाद, 2014, पृ0सं0–67